एनी सुलीवन
हेलन केलर
की टीचर

एनी सुलीवन

हेलन केलर की टीचर

जब एनी सुलीवन छोटी थी तो उसे कम दिखाई देता था. क्यूंकि उसे अच्छी तरह दिखाई नहीं देता था इसलिए उसने ब्रेल लिपि सीखी. बाद में डॉक्टर्स की सहायता से उसकी उसकी आँखें बेहतर हुईं. फिर एनी सुलीवन को जो भी किताब मिलती वो उसे ज़रूर पढ़ती.

बाद में एनी सुलीवन, हेलन केलर की टीचर बनी. हेलन न देख सकती थी और न ही सुन-बोल सकती थी. हेलेन को सिखाना बहुत कठिन काम था. पर एनी ने वो काम बखूबी किया. बड़े होने पर हेलन केलर बहुत काबिल महिला बनी. एनी सुलीवन एक बहुत अच्छी टीचर साबित हुईं.

घोड़ागाड़ी एक पुरानी इमारत के सामने आकर रुकी. उसमें से दो बच्चे उतरे. उनमें एक थी दस साल की एनी सुलीवन और दूसरा उसका छह साल का छोटा भाई जिमी. एनी ने कई बार अपनी आँखें झपकीं, क्यूंकि रोशनी से उसकी आँखें दुखती थीं. वो लगभग अंधी थी. जिमी देख सकता था पर वो लंगड़ा था.

"हम कहाँ हैं?" एनी ने पूछा.

वो स्थान मेसाचुसेट्स, अमरीका में गरीब बच्चों का एक अनाथ-आश्रम था. एनी और जिमी वहां रहने के लिए आये थे. उनके परिवार में उनकी परवरिश करने वाला कोई ज़िंदा नहीं बचा था.

एनी ने कसकर जिमी का हाथ पकड़ा था. वो उसे जाने नहीं दे रही थी. फिर उन्हें एक छोटे कमरे में ले जाया गया. जिमी ने एनी को बताया कि कमरे में एक मेज़, एक कुर्सी और एक पलंग था.

उस ज़माने में बहुत से गरीब बच्चे ऐसे अनाथालयों में रहते थे. वहां पर हमेशा हर उम्र के गरीब लोगों की भीड़ होती थी. वहां कुछ लोग बूढ़े थे. कुछ लोग अंधे या लूले-लंगड़े थे.

जिमी की सेहत पहले से ही खराब थी. अनाथालय में आने के कुछ महीनों बाद ही उसका देहांत हो गया. भाई के मरने के बाद एनी बहुत रोई. अब वो दुनिया में बिल्कुल अकेली रह गई थी.

पर अनाथालय के लोगों को एनी पसंद आई. वो बड़ी चंचल और होशियार थी. उसके बाल काले थे और वो हमेशा मुस्कुराती रहती थी. अनाथालय में एनी के मित्रों ने उसे बताया कि अंधे बच्चों के लिए अमरीका में विशेष स्कूल थे. मौका मिलने पर एनी, अंधों के विशेष स्कूल में जाकर ज़रूर सीखेगी.

एक दिन कुछ ख़ास मेहमान अनाथालय को देखने आये. एनी दौड़ी हुई उन पास गई और उसने उनसे विशेष स्कूल में जाने की फरमाइश की. उनमें से एक बूढ़े ने एनी की मदद करने एक वादा भी किया. अब एनी बड़ी हो गई थी. वो अंध बच्चों के लिए स्थापित बोस्टन की पर्किन्स इंस्टिट्यूट में जाने को तैयार थी.

एनी ने पर्किन्स के बारे में पहले से सुन रखा था. वो अंध बच्चों के लिए एक मशहूर स्कूल था. वहां पर लौरा ब्रिजमैन नाम की एक लड़की को डॉ. सैमुएल ग्रिडले होए ने पढ़ाया था. लौरा देख, सुन, और बोल नहीं सकती थी. उसने लोगों की हथेली पर उँगलियों से "टैप" करके लोगों से बातचीत करना सीखी. उत्तर में लोग लौरा की हथेली को अपनी ऊँगली से "टैप" करते थे. डॉ. होए का अब देहांत हो गया था, पर बूढ़ी लौरा ब्रिजमैन अभी भी पर्किन्स में रहती थीं.
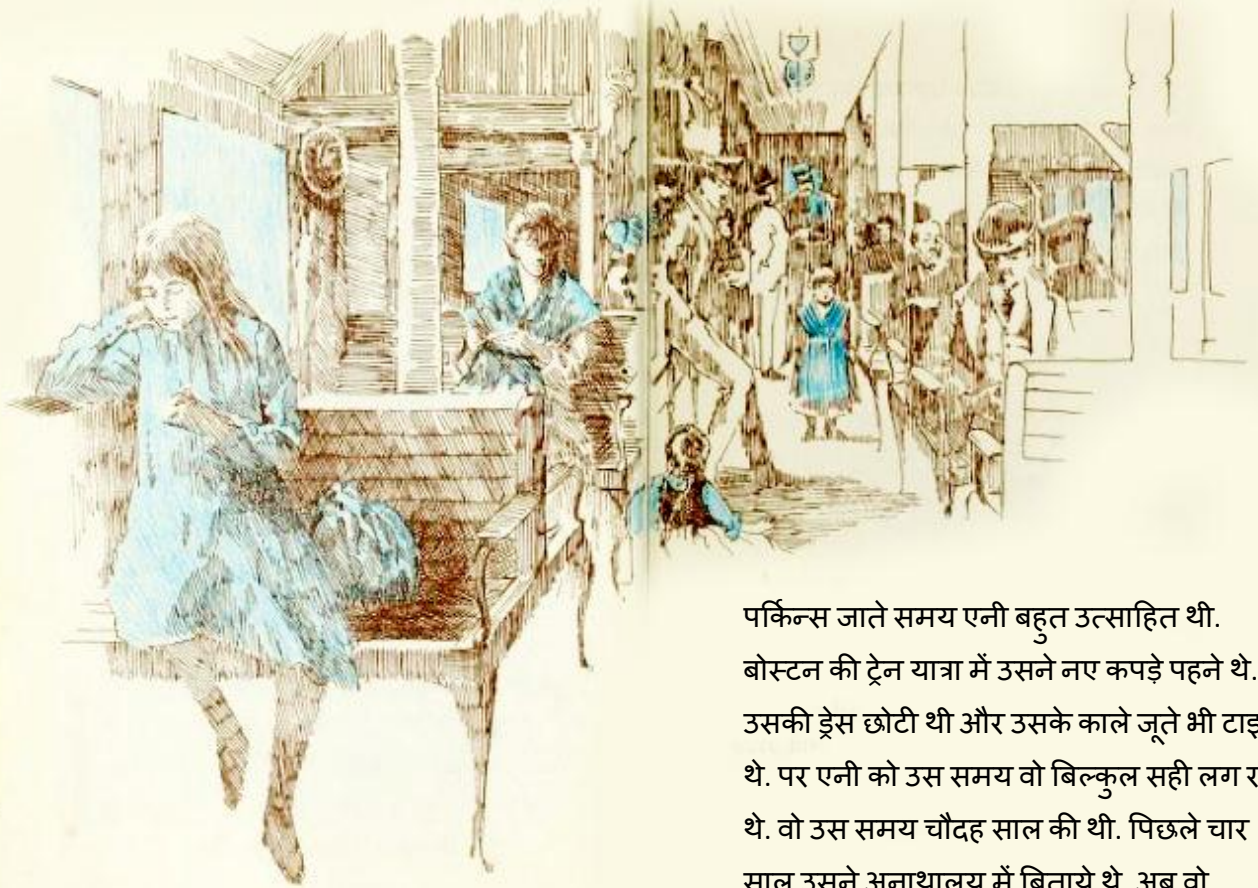
पर्किन्स जाते समय एनी बहुत उत्साहित थी. बोस्टन की ट्रेन यात्रा में उसने नए कपड़े पहने थे. उसकी ड्रेस छोटी थी और उसके काले जूते भी टाइट थे. पर एनी को उस समय वो बिल्कुल सही लग रहे थे. वो उस समय चौदह साल की थी. पिछले चार साल उसने अनाथालय में बिताये थे. अब वो अनाथालय छोड़ते हुए खुश थी.

पर्किन्स इंस्टिट्यूट में एनी का जीवन आसान न था. वहां पर ज़्यादातर लड़कियां अमीर घरों की थीं. अनाथालय से आई एक गरीब लड़की से वो धनी लड़कियां दोस्ती नहीं करना चाहती थीं. एनी उन्हें बिगड़ी और अशिष्ट लगी.

शुरू में एनी को उसकी उम्र से छोटे बच्चों के क्लास में रखा गया. पर जल्द ही एनी अपनी उम्र के बच्चों के साथ पढ़ने लगी. उसके बाद उसे स्कूल में मज़ा आने लगा. उसने ब्रेल पढ़ना सीखने के लिए बहुत श्रम किया. ब्रेल, छह उभरी बिंदियों की लिखाई है जिसे छू-छूकर अंध बच्चे पढ़ते हैं.

ब्रेल अक्षरमाला

BRAILLE ALPHABET

A B C D E F G H I

J K L M N O P Q R

S T U V W X Y Z

कुछ समय बाद एनी को आँख के ऑपरेशन के लिए अस्पताल भेजा गया. ऑपरेशन के बाद एनी पहले से बेहतर देखने लगी. फिर उसे जो भी मिलता वो उसे ज़रूर पढ़ती. अक्सर वो देर रात तक किताबें पढ़ती रहती थी. अस्पताल में डॉक्टरों ने एनी को सावधानी बरतने की चेतावनी दी थी. उसकी आँखें कभी भी बहुत अच्छी नहीं होंगी. पर एनी दुनिया के बारे में बहुत कुछ जानना चाहती थी! जब तक उसकी आँखें दुखने नहीं लगतीं थी तब तक एनी पढ़ती रहती थी!

बीस साल की उम्र में एनी ने पर्किन्स इंस्टिट्यूट से स्नातक की डिग्री हासिल की. वो अपने क्लास में पहले नम्बर पर रही. उसकी एक टीचर ने एनी के लिए एक सफ़ेद ड्रेस बनाई. एनी ने वो ड्रेस बड़े गर्व से पहनी. जिस दिन उसे डिग्री मिली वो दिन एनी के लिए जीवन का सबसे खुश दिन था. पर्किन्स इंस्टिट्यूट से पास होने के बाद एनी को तुरंत एक नौकरी का ऑफर मिला.

अलाबामा के कप्तान और मिसेज़ केलर को अपनी छोटी बेटी हेलन के लिए एक टीचर की तलाश थी. हेलन छह साल की थी. वो न देख सकती, न सुन सकती थी और न ही बोल सकती थी. हेलन जन्म से वैसी नहीं थी. पर जब वो दो साल की हुई तो एक बीमारी में उसकी रोशनी, सुनने और बोलने की शक्ति जाती रही. अब हेलन एक स्याह ज़िन्दगी गुज़ार रही थी. कोई भी उसके साथ बातचीत नहीं कर सकता था. उसके माता-पिता को भी हेलन के भविष्य के बारे में कुछ पता नहीं था.

हेलन के माता-पिता उसे डॉ.एलेग्जेंडर ग्रैहम बेल के पास ले गए. उन्होंने टेलीफोन का अविष्कार किया था और वो बहरेपन के बारे में काफी कुछ जानते थे.

डॉ. एलेग्जेंडर ग्रैहम बेल को हेलन काफी होशियार लगी. उन्हें पर्किन्स इंस्टिट्यूट को लिखने की राय दी. कप्तान और मिसेज़ केलर वही किया और जल्द ही उन्हें अपने पत्र का उत्तर भी मिला. एनी सुलीवन जल्द ही हेलन को पढ़ाने के लिए आ रही थी.

एनी सुलीवन को अपनी नौकरी अच्छी लगी. वो अभी जवान थी. उसमें हिम्मत और साहस था. अँधा होना कैसा होता है? उसे इस बात का भी अनुभव था.

सबसे पहले एनी ने लौरा ब्रिजमैन के बारे में डॉ. होए के नोट्स पढ़े. हेलन का केस काफी कुछ लौरा ब्रिजमैन जैसा ही था. इसलिए एनी उसके बारे में सब कुछ जानना चाहती थी. उसके बाद एनी लौरा से मिलने गई. दोनों ने एक-दूसरे की हथेलियों पर "टैप" करके आपस में बातचीत की. बूढ़ी लौरा ब्रिजमैन ने छोटी हेलन केलर में रूचि दिखाई. उन्होंने एनी के साथ हेलन के लिए एक गुड़िया भेजी.

फिर एनी एक लम्बी यात्रा के बाद टुस्कुम्बिया, अलाबामा पहुंची. वो काफी थकी हुई थी और उसे अपने घर की याद सता रही थी. कोयले के इंजन की राख से उसकी दोनों आँखें लाल हो गईं थीं. कप्तान और मिसेज़ केलर स्टेशन पर उसे लेने आए. वे एनी को देखकर बहुत खुश हुए. वो पिछले दो दिनों से हर ट्रेन पर एनी की राह देख रहे थे.

हेलन घर पर ही इंतज़ार कर रही थी. उसे इस बात का ज़रूर आभास था कि कुछ अलग होने वाला है. हेलन को देखते ही एनी उसकी उदासी और दुःख को भांप गई. उसे उम्मीद थी कि एक दिन वो हेलन को उस स्याह ज़िंदगी से ज़रूर बाहर निकाल पाएगी.

एनी जल्द ही समझ गई कि कप्तान और मिसिज़ केलर ने हेलन को किसी भी तरह की ट्रेनिंग नहीं दी थी. पूरा परिवार हेलन को दया की दृष्टि से देखता था.

वो हर काम हेलन को खुश करने के लिए करते थे. हेलन किसी की प्लेट से भी खाना उठाक़र खाती थी, मेहमानों की प्लेट से भी. हेलन को देखकर एनी को दुःख हुआ. एनी ने निर्णय लिया - वो हेलन के साथ एक साधारण इंसान जैसे पेश आएगी.

परिवार के साथ पहले भोजन के दौरान एनी, हेलन के पास बैठी. उसने हेलन को अपने मुंह में खाना ठूसने से रोका. यह देख हेलन को काफी आश्चर्य हुआ. हेलन ने गुस्से में अपने पैर ज़मीन पर पटके. एनी ने परिवार के बाकी सदस्यों से कमरा छोड़कर जाने को कहा. लोगों के जाने के बाद एनी के कमरा बंद किया जिससे हेलेन भाग न जाए. हेलन ने दरवाज़े को लात मारी और वो एनी को भी मारने के लिए भी दौड़ी. हेलन चीखी-चिल्लाई और ज़मीन पर लोटी. पर एनी ने हेलन को ज़बरदस्ती उसकी कुर्सी पर बैठाया और उसे अपनी ही प्लेट से खाने को कहा. खाते समय उसने हेलन को चम्मच और नैपकिन का उपयोग भी सिखाया. कई घंटे बाद ही हेलन ने एनी का कहना माना. तब तक एनी थक कर पस्त हो गई थी. उसके बाद एनी ने हेलन को जाने दिया. फिर एनी अपने कमरे में जाकर पलंग पर पड़ गई और रोने लगी.

कुछ देर के बाद एनी ने बेहतर महसूस किया. फिर उसके दिमाग में एक विचार आया. सबसे पहले वो हेलन को उसके परिवार से बाहर निकालेगी. जब हेलन, एनी के साथ अकेली रहेगी तभी वो एनी की बात मानना सीखेगी. अगले दिन एनी ने कप्तान और मिसेज़ केलर से पूछा कि क्या कुछ दिनों के लिए वो और हेलन अकेले रह सकते थे? कप्तान केलर को ये बात पसंद नहीं आई. एनी ने उन्हें समझाया - हेलन को काबू में लाने का यही एक मात्र तरीका था. अंत में उन्होंने एनी के सुझाव को माना.

एनी, हेलन को बड़े मकान के पास ही स्थित एक छोटे से घर में ले गई. शुरू में एनी की योजना ठीक नहीं रही. हेलन, ने एनी को उसे छूने का मौका ही नहीं दिया. जब रात को एनी, हेलन को सुलाने एक लिए बिस्तर पर लिटाती तो हेलन उससे लड़ती. अंत में थकने के बाद हेलन सो जाती. सुबह को एनी, हेलन को पहनने के लिए कपड़े देती, पर हेलन कपड़ों को फेंक देती. हेलन जब तक कपड़े नहीं बदलती तब तक एनी उसे खाने को नाश्ता नहीं देती थी. यह सिलसिला कई हफ़्तों तक ज़ारी रहा.

हेलन बहुत ताकतवर और ज़िद्दी थी. पर एनी उससे कुछ ज़्यादा ताकतवर और ज़िद्दी थी.

एक दिन सुबह को कप्तान केलर आए और उन्होंने उन दोनों को खिड़की में से झाँक कर देखा. उन्होंने हेलन को रात के नाईटगाउन में ज़मीन पर बैठे हुए देखा. एनी समझ गई कि कप्तान केलर यह देख कर नाराज़ होंगे. एक नौकर ने बताया कि कप्तान साहिब एनी को बोस्टन वापिस भेजने की बात सोच रहे थे. पर एनी अपनी योजना पर कायम रही. उसे पता था कि कुछ भी सिखाने से पहले हेलन उसके कंट्रोल (नियंत्रण) में आनी चाहिए.

जब एनी और हेलन के बीच संघर्ष होता तब एनी, हेलन की हथेली पर शब्द टैप करती थी. हेलन उन शब्दों को जल्द ही सीख गई. पर अभी भी हेलन को यह नहीं पता था कि हर चीज़ का एक नाम होता है - और हरेक नाम के लिए एक अलग शब्द होता है. उसे यह भी नहीं पता था कि शब्दों को मिलकर वाक्य बनते हैं.

अंत में हेलन के व्यवहार में सुधार आया. एनी ने अपनी डायरी में लिखा कि हेलन अब बर्बर और अशिष्ट नहीं रही थी. एनी अब हेलन को छू सकती थी और उसे अपनी गोद में बैठा सकती थी.

दो हफ्ते अकेले रहने के बाद हेलन और एनी बड़े घर में वापिस गए. हेलन में आये परिवर्तन को देखकर केलर दंपत्ति बेहद खुश हुए. अब हेलन चुपचाप बैठकर अपनी गुड़ियों से खेलती थी. एनी ने पूरे परिवार को उँगलियों से अक्षर बनाना सिखाया. अब परिवार के लोग भी हेलन से बातचीत कर सकते थे.
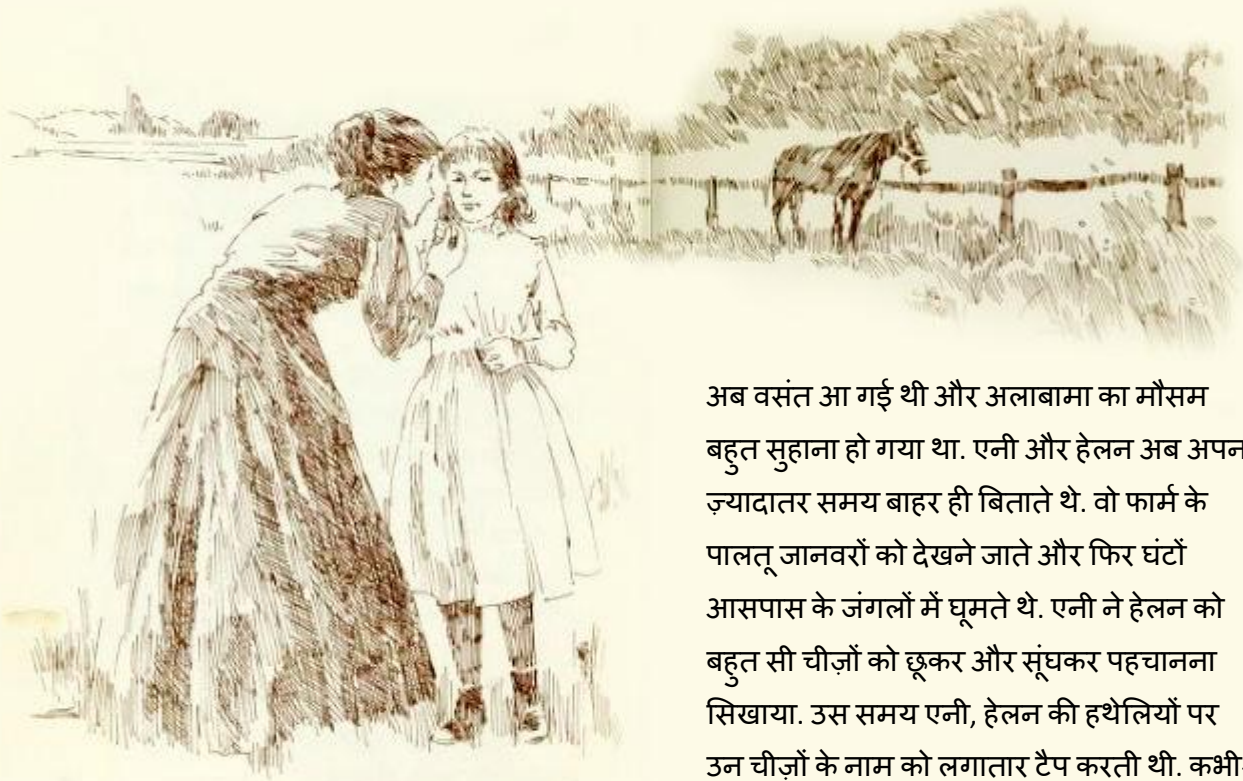
अब वसंत आ गई थी और अलाबामा का मौसम बहुत सुहाना हो गया था. एनी और हेलन अब अपना ज़्यादातर समय बाहर ही बिताते थे. वो फार्म के पालतू जानवरों को देखने जाते और फिर घंटों आसपास के जंगलों में घूमते थे. एनी ने हेलन को बहुत सी चीज़ों को छूकर और सूंघकर पहचानना सिखाया. उस समय एनी, हेलन की हथेलियों पर उन चीज़ों के नाम को लगातार टैप करती थी. कभी-कभी हेलन के दिमाग में चीज़ें और उनका नाम अंकित भी हो जाता.

"मग" और "वाटर" (पानी) को लेकर हेलन के दिमाग में दुविधा थी. फिर एनी को उसे स्पष्ट करने की एक तरकीब समझ आई. एनी, हेलन को बाहर हैंडपंप पर ले गई. वहां उसने हेलन के हाथ में एक मग दिया और खुद पानी पम्प करना शुरू किया. नल का ठंडा पानी हेलन के हाथों पर बहने लगा. जब यह हो रहा था तब एनी ने हेलन की हथेली पर "वाटर" (पानी) शब्द लिखा.

अचानक हेलन का चेहरा बदल गया. ऐसा लगा जैसे पहली बार उसका चेहरा खिल उठा हो. उसने खुद कई बार "वाटर" (पानी) लिखा. उसने पंप और ज़मीन की ओर इशारा किया और उनके नाम पूछे. जल्दी से उन शब्दों को एनी ने हेलन की हथेली पर लिख दिया. अब पहली बार हेलन जिस चीज़ को छूती, सूंघती वो उस चीज़ का नाम भी जानने को इच्छुक थी. हेलन ने थोड़े ही समय में 30 नए शब्द सीख लिए.

यह देखकर एनी की ख़ुशी का ठिकाना नहीं रहा. एनी को अब विश्वास हुआ कि अब अंत में वो हेलन के हृदय को छू पाई थी और अँधेरे में एक रोशनी की किरण चमका पाई थी. एनी ने हेलन को अपने आसपास की दुनिया को समझने के लिए एक जादुई चाभी दी थी - भाषा की चाभी.

उसके बाद हेलन ने एनी से उसका नाम पूछा. एनी ने हथेली पर लिखा "टीचर". उसके बाद से हमेशा हेलन के लिए एनी का वही नाम रहा.

उस रात हेलन ने एनी को गले लगाया और उसे एक पुच्ची दी. अब एनी का दिल ख़ुशी से भरा था. उसे यह पता था कि हेलन उससे बहुत प्रेम करती थी. एनी ने यह भी तय किया कि वो अपनी पूरी ज़िन्दगी हेलन की मदद करेगी.

एनी की नौकरी का पहला चरण अब ख़त्म हो गया था. एनी ने हेलन को घर पर ही कई साल पढ़ाया. हेलन बहुत होशियार थी और वो सीखने को बहुत इच्छुक थी. एनी को अब समझ आ गया था कि हेलन अपने जीवन कुछ महत्वपूर्ण चीज़ें हासिल करेगी और किसी ऊंचे मुकाम पर पहुंचेगी.

एनी को यह भी पता था कि अन्य लोग हेलन को और बहुत कुछ सिखा सकते थे. उसने केलर परिवार से हेलन को पर्किन्स इंस्टिट्यूट ले जाने की अनुमति मांगी. अब तक केलर परिवार को एनी पर पूरा विश्वास हो गया था. उन्होंने एनी को तुरंत अनुमति दे दी.

पर्किन्स में एनी हमेशा हेलन के साथ रहती थी और उसे हमेशा कुछ-न-कुछ नया सिखाती थी. उसने हेलन को दूसरे लोगों से बोलना और उनकी बात सुनना भी सिखाया. उसके लिए हेलन, बोलने वाले के होठों, नाक और गले पर अपने हाथ रखती थी. वो ध्वनि के कम्पन को सुनती थी और उससे लोगों की बात का अनुमान लगाती थी.

हेलन केलर की प्रसिद्धि में एनी का बहुत बड़ा हाथ था. पूरी दुनिया ने हेलन केलर के बारे में सुना. तमाम लोग उससे मिलने आये. एनी को भी कई नई नौकरियों के ऑफर मिले. पर एनी ने हेलन केलर का साथ कभी नहीं छोड़ा. कुछ समय बाद कप्तान केलर का देहांत हो गया. उसके बाद मिसेज़ केलर ने अपनी बेटी हेलन की पूरी ज़िम्मेदारी एनी पर छोड़ दी.

एनी ने हेलन की कॉलेज जाने में मदद की. वो हेलन के साथ हर क्लास में बैठती. एनी को भी हेलन के सभी विषय पढ़ने पड़ते थे. पढ़ते-पढ़ते अक्सर एनी की आँखें दुखने लगती थीं. जिस दिन हेलन को स्नातक की डिग्री मिली उस दिन एनी भी हेलन के साथ-साथ स्टेज पर गई. एनी को अपने छात्र पर गर्व था. हेलन अब एक सुन्दर और पढ़ी-लिखी युवती थी.

हेलन के कॉलेज समाप्त करने के बाद के साल एनी के लिए बहुत सुखद रहे. एनी और हेलन ने एक बड़ा घर खरीदा और वो दोनों एक-साथ रहे. उनके बहुत सारे दोस्त थे. एनी को खाना पकाने और लोगों को घर बुलाने में बहुत मज़ा आता था.

एनी ने एक लेखक - जॉन मेसी से शादी की. शादी से पहले एनी ने यह पक्का किया कि हेलन हमेशा उसके साथ रहेगी. हेलेन ने जब अपनी पहली किताब - द स्टोरी ऑफ़ माय लाइफ (मेरे जीवन की कहानी) लिखी तो उसमें जॉन ने एनी ने हेलन की बहुत मदद की. यह दुनिया से सबसे लोकप्रिय पुस्तकों में से एक है.
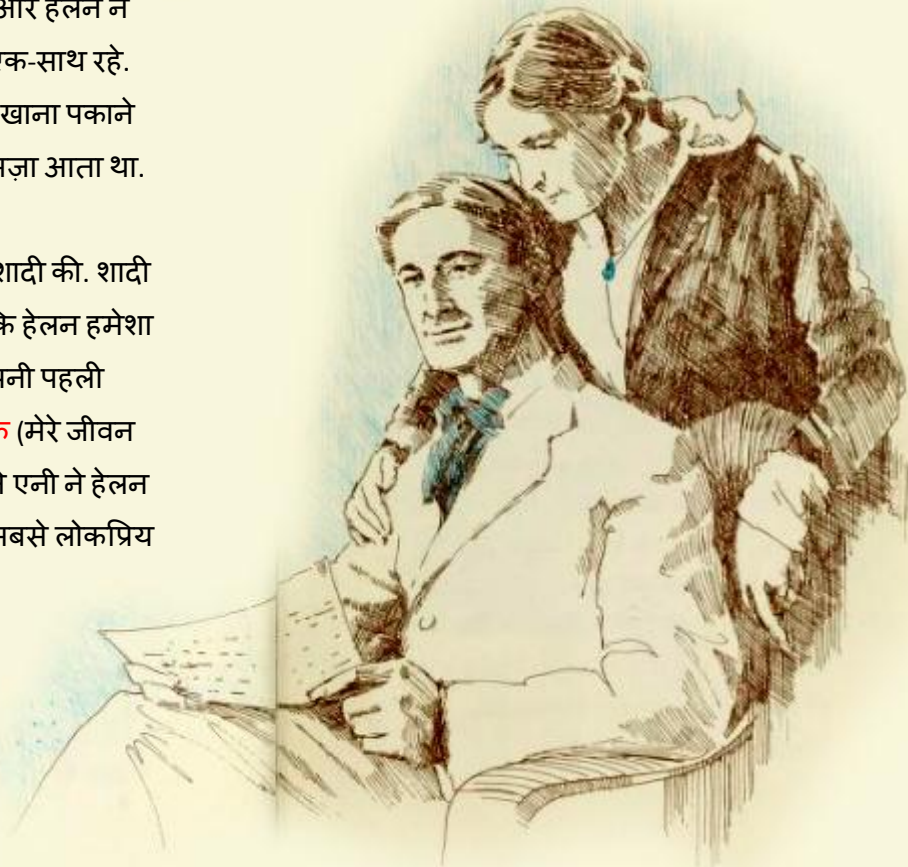
एनी ने बहुत मेहनत से काम किया. वो हेलन के सभी लेखों और निबंधों को पढ़कर उन्हें सुधारती थी. जब हेलेन यात्रा पर जाती तो एनी हमेशा उसके साथ जाती. वहां वो लोगों को हेलन की बात समझाती. साथ में एनी पर घर चलाने की भी पूरी ज़िम्मेदारी थी. एक बार एनी बीमार पड़ी और उन्हें अस्पताल में दाखिल होना पड़ा. उसकी आँखों में बहुत तकलीफ थी. फिर जॉन मेसी चला गया.

उसके जाने के बाद उन्होंने बड़ा घर बेंच दिया और वे एक छोटे घर में रहने लगे. एनी और हेलन दोनों ने कभी पैसे बचाकर नहीं रखे. वे अपनी कमाई गरीबों को दान में दे देती थीं. वे हमेशा अमेरिकन फाउंडेशन ऑफ़ द ब्लाइंड की मदद करती थीं. हेलन ने अपनी पुस्तक की सारी रॉयल्टी प्रथम महायुद्ध में अंधे हुए सैनिकों में बाँट दी.

प्रथम महायुद्ध के ख़त्म होने पर एनी और हेलन दोनों हॉलीवुड चले गए. वहां पर हेलेन केलर के जीवन पर एक फिल्म बनी. उसके बाद दोनों को कई शहरों में लेक्चर और शो के लिए आमंत्रित किया गया. वहां उनके शो बेहद सफल हुए और उससे उन्हें काफी धन भी मिला. अब एनी और हेलन आराम से अपनी ज़िन्दगी गुज़ार सकती थीं. पर अब दिन-ब-दिन एनी की आँखों की रोशनी कमज़ोर होती जा रही थी. एनी ने हेलन की दूसरी किताब ख़त्म करने में भी मदद की. उसके बाद से एनी अपनी आँखों का उपयोग नहीं कर पाई.

पर अब पोली थॉमसन उनकी मदद करने के लिए आ गई थी. पोली स्कॉटलैंड की रहने वाली एक खुशमिज़ाज़ युवती थी. उसने एनी और हेलन के साथ रहना शुरू कर दिया. एनी ने पोली को हेलन के साथ काम करना सिखाया.

अपनी ज़िंदगी के आखिरी समय में एनी को कई पुरुस्कारों से सम्मानित किया गया. एनी ने हेलन केलर के साथ पचास से भी ज़्यादा साल बिठाये थे. कुछ लोगों का मानना था कि हेलन का एनी के बिना काम नहीं चल सकता था. पर एनी को ऐसा बिल्कुल नहीं लगता था. हेलन को भी यह बात पता थी. अपनी "टीचर" की मृत्यु के बाद भी हेलन केलर बहुत सालों तक जीवित रही. एनी सुलीवन ने हेलन केलर को बहुत अच्छी ट्रेनिंग दी थी.

समाप्त